आई.एच.बी.टी. संवाद

वर्ष 3 जनवरी–मार्च 2012 अंक 12

विज्ञान में युवा नेतृत्व प्रशिक्षण कार्यक्रम (CPYLS)

संस्थान में सी.एस.आई.आर. की विज्ञान में युवा नेतृत्व योजना (सी.पी.वाई.एल.एस.) के अन्तर्गत दो दिवसीय कार्यक्रम (24-25 जनवरी, 2012) का आयोजन किया गया।इस कार्यक्रम का उद्देश्य विज्ञान के क्षेत्र में युवा प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करना है। इस कार्यक्रम में प्रदेश के विभिन्न भागों से सी.बी.एस.सी, आई.सी.एस.ई. तथा हि.प्र. शिक्षा बोर्ड के दसवीं कक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने वाले 50 विद्यार्थियों ने प्रतिभागिता की। अपने अध्यक्षीय संबोधन में संस्थान के

हिमालय जैवसंपदा प्रौद्योगिकी संस्थान, पालमपुर–हिमाचल प्रदेश

वरिष्ठतम वैज्ञानिक डा. अनिल सूद ने प्रदेश के विभिन्न भागों से आये हुए प्रतिभावान विद्यार्थियों तथा उनके अविभावकों का स्वागत किया। उन्होंने संस्थान तथा सी.एस.आई.आर. के विभिन्न संस्थानों के कार्यक्षेत्र का विवरण प्रस्तुत किया तथा प्रमुख गतिविधियों एवं उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने भारत के प्रमुख वैज्ञानिक संस्थानों की भूमिका पर भी प्रकाश डाला। उन्होने विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे इस दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम से लाभ उठाएं। साथ ही उन्होंने बच्चों को विज्ञान के क्षेत्र में उपलब्ध अवसरों तथा नवोन्मेष शोध के लिए भी प्रेरित किया।

इस दौरान इन विद्यार्थियों को संस्थान की विभिन्न शोध एवं विकास कार्यक्रमों से परिचय करवाया गया तथा प्रक्षेत्र की व्यावहारिक जानकारी प्रदान की गई।

समापन सत्र में प्रतिभागियों ने इस कार्यक्रम के बारे में अपने-अपने विचार रखे। सभी प्रशिक्षार्थियों को प्रमाणपत्र से सम्मानित भी किया गया।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस-2012

संस्थान में 28 फरवरी 2012 को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह का आयोजन किया गया। समारोह के मुख्यातिथि एवं वक्ता डा॰ आर॰ ऊमा शंकर, प्रोफेसर, क्रॉप फिसिओलाजी विभाग, यूनिवर्सिटी आफ एग्रिकल्चरल साइंसेस, बंगलुरु थे। डा॰ शंकर ने पौधे रेचक द्रव्य क्यों बनाते हैं विषय पर संभाषण दिया। उन्होंने अपने संभाषण में सिद्ध किया कि उच्च शोध के लिए किसी समस्या की परिकल्पना करके सार्थक निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं। उन्होंने बताया कि पौधों में कुछ अनूठे द्रव्यों की रचना के रहस्य को समझने के लिए वनस्पतियों एवं उन पर निर्भर प्राणियों के बीच अन्तरक्रिया तथा विकास को भली भाँति समझना होगा। हमें अपने समृद्ध जैविक संसाधनों पर इतराने की अपेक्षा समुदाय, देश एवं संपूर्ण मानव कल्याण के लिए अनुसंधान द्वारा प्रकृति की इस देन का निष्ठापूर्वक दोहन करना चहिए।

संस्थान के निदेशक, डा॰ परमवीर सिंह आहूजा ने कहा कि हमें व्यक्ति विशेष नहीं

बल्कि उनकी उपलब्धियों की प्रशंसा करनी चाहिए और शिक्षा लेनी चाहिए। उन्होंने छात्रों से आह्वान किया कि हमें विज्ञान में सत्य कि खोज के लिए निडर हो कर अपने लक्ष्य कि ओर बढ़ना चाहिए। इस अवसर पर संस्थान के वैज्ञानिक डा॰ अरुण कुमार सिन्हा एवं उनकी शोध टीम को उनके उच्चतम इम्पैक्ट फैक्टर वाले शोध पत्र के लिए सम्मानित किया गया। समारोह में क्रिसकेंट पब्लिक स्कूल के अध्यापकों एवं जय पब्लिक स्कूल के छात्रों, कृषि विश्वविध्यलय के प्राध्यापकों, भारतीय पशु शोध संस्थान और केंद्रीय घास एवं चारा संस्थान के स्थानीय केंद्रों के वैज्ञानिकों तथा अन्य गणमानय महानुभाव उपस्थिति हुये।

आजीविका विकल्पों को बढ़ाने हेतु प्रशिक्षण एवं अभिविन्यास कार्यशाला

संस्थान में आजीविका विकल्पों को बढ़ाने हेतु क्षेत्रीय जैवसंसाधनों का सतत उपयोग पर जनवरी से मार्च 2012 (3-5 जनवरी, 18-20 जनवरी, 1-3 फरवरी, 14-16 फरवरी, 13-15 मार्च) के दौरान पांच कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। उक्त कार्यशाला जिला जलागम विकास संस्था, जिला शिमला (हि.प्र.) द्वारा जिले के ग्रामीणों के आजीविका विकल्पों को बढ़ाने हेतु क्षेत्रीय जैवसंसाधनों का सतत उपयोग हेतु प्रायोजित की गई। अंतराफसली विधियाँ बच (*एकोरस कैलेमस*) बांस का प्रवर्धन, रोपण एवं विविध उपयोग की विधियाँ हिमाचल प्रदेश के जंगलों में उगने वाले गुलाबों की प्रजातियों की जानकारी और इनके उपयोग की संभावनाएँ औषधीय और सुगंधित पौधों का मूल्यसंवर्धन, अधिद्रष्य स्थानीय पौधा संसाधनों का मूल्य बढ़ा कर उच्च कीमत प्राप्त करने की संभावनाएँ, चयनित वाणिज्यिक फूलों की फसलों की खेती, सगंध तेल आसवन के सिद्धांतों और पद्धतियों की जानकारी, औषधीय जड़ी बूटियों का एकत्रीकरण, कटाई, सुखाना और भंडारण की वैज्ञानिक पद्धतियां, हिमाचल प्रदेश में प्राकृतिक रंग-रंजक के उत्पादन की संभावनाएँ, हर्बल निष्कर्षण और गुणवत्ता नियंत्रण विधियों का प्रायोगात्मक प्रदर्शन आदि विषयों पर विस्तार से बताया गया ताकि किसान अपनी आजीविका विकल्पों को बढा सकें। संस्थान के निदेशक डा. परमवीर सिंह आहूजा ने सभी प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए संस्थान की गतिविधियों से परिचित कराया तथा उन्होंने किसानों बताया कि औषधीय जड़ी बूटियों और पुष्प फसलों से संबन्धित किसी भी जानकारी के लिए संस्थान हमेशा तत्पर रहता है तथा वे इस संस्थान द्वारा विकसित तकनीकों/ फसलों को अपने-अपने क्षेत्रों में अपनाकर आजीविका विकल्पों को बढ़ा सकते हैं।

गणतन्त्र दिवस समारोह

बासठवें गणतन्त्र दिवस, वृहस्पतिवार, 26 जनवरी 2012 के अवसर पर संस्थान के प्रांगण में ध्वजारोहण समारोह का आयोजन किया गया। संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. अनिल सूद ने ध्वजारोहण किया तथा संस्थान के कर्मियों एवं उनके परिवार के सदस्यों को गणतन्त्र दिवस की शुभकामनाएं दी। इस अवसर पर उन्होंने संस्थान के स्टाफ क्लब की पत्रिका "मंथन" का विमोचन किया।

PUBLICATIONS

Bhardwaj PK, Kaur J, Sobti RC and **Kumar S** (2011) Identification and expression analysis of *CjLTI*, a novel low temperature responsive gene from *Caragana jubata*. *Molecular Biology Reports*, 39(3): 3197-3202. DOI: 10.1007/s11033-011-1086-6.

Uniyal SK and **Jaryan V** (2012) Need for a centralized digital inventory on floral additions. *Current Science* 102(4): 544.

Chaudhary A, Sood S, Kaur P, Kumar N, Thakur A, Gulati A and **Singh B** (2012). Antifungal sesquiterpenes from *Cedrus deodara*. *Planta Medica* 78(2): 186 -188.

Gill T, Dogra V, Kumar S, Ahuja PS and **Sreenivasulu Y** (2012) Protein dynamics during seed germination under copper stress in Arabidopsis over-expressing Potentilla superoxide dismutase. *Journal of Plant Research*, 125(1): 165-172.

Kaur D, Ogra RK, Bhattacharya A and **Sood A** (2012) Changes in sugar levels during slow growth of Dendrocalamus hamiltonii somatic embryos due to liquid paraffin overlay. *In Vitro Cellular & Developmental Biology-Plant*, 48(1): 120-126.

Kaur Pushpinder, Abha Chaudhary, Singh RD, Gopichand, Ramdeen Prasad and Bikram Singh. (2012) Spatial and temporal variation of secondary metabolite profiles in *Ginkgo biloba* leaf. *Chemistry and Biodiversity* 9: 409-416.

Kaur Pushpinder, Chaudhary Abha, Singh Bikram and **Gopichand** (2012) An efficient microwave assisted extraction of phenolic compounds and antioxidant potential of *Ginkgo biloba*, *Natural Product Communications* 7(2): 203-206.

Kumar G, Kanaujia N and **Bafana A** (2012) Functional and phylogenetic diversity of root-associated bacteria of Ajuga bracteosa in Kangra valley. *Microbiological Research*,167(4): 220-225.

Kumar H, Kaul K, Gupta-Bajpai S, Kaul, VK and **Kumar S** (2012) A comprehensive analysis of fifteen genes of steviol glycosides biosynthesis pathway in *Stevia rebaudiana* (Bertoni). ***Gene*** 492: 276-284.

Kumar Rakesh, Shard Amit, Bharti Richa, Thopate Yogesh and **Sinha Arun Kumar** (2012) Pd-catalysed dehydrative-heck olefination of 2° aryl alcohols in ionic liquid: towards a waste-free strategy for tandem synthesis of stilbenoids. *Angew. Chem. Int. Ed*. 51, 2636-2639.

Kumar V and **Yadav SK** (2012) Synthesis of different-sized silver nanoparticles by simply varying reaction conditions with leaf extracts of *Bauhinia variegate* L. *IET Nanobiotechnology* 6: 1-8.

Kumar V, Sharma U, Verma PK, Kumar N and **Singh B** (2012) Cobalt(II) Phthalocyanine-Catalyzed Highly Chemoselective Reductive Amination of

Carbonyl Compounds in a Green Solvent. *Advanced Synthesis & Catalysis,* 354(5): 870-878.

Kushwaha Rekha, Bhattacharya Amita, Singh Bikram and Singh RD (2012) Factors affecting podophyllotoxin yield in the ex situ grown *Podophyllum hexandrum*, an endangered alpine native of the western Himalayas. *Journal of Natural Medicine* 66: 1-7.

Mamta, Rahi P, Pathania V, Gulati A, Singh B, Bhanwra RK and Tewari R (2012) Comparative efficiency of phosphate solubilizing bacteria under greenhouse conditions for promoting growth and aloin-A content of *Aloe barbadensis. Archives of Agronomy and Soil Science* 58 (4): 437-449.

Mohanpuria Prashant and Yadav Sudesh Kumar (2012) Characterization of novel small RNAs from tea (*Camellia sinensis* L.). *Mol Biol Rep.* 39: 3977-3986.

Paul A, Lal L, Ahuja PS and Kumar S (2011) *Alpha-tubulin* (*CsTUA*) up-regulated during winter dormancy is a low temperature inducible gene in tea (*Camellia sinensis* (L.) O. Kuntze). *Molecular Biology Reports* 39(4): 3485-3490.

Rahi P, Kapoor R, Young JPW and Gulati A (2012) A genetic discontinuity in root-nodulating bacteria of cultivated pea in the Indian trans-Himalayas. *Molecular Ecology* **21:** 145-159.

Rani A, Singh K, Ahuja PS and Kumar S (2012) Molecular regulation of catechins biosynthesis in tea (*Camellia sinensis* (L.) O. Kuntze). ***Gene*** 495: 205-210. DOI: 10.1016/j.gene.2011.12.029.

Seth CS (2012) A Review on Mechanisms of Plant Tolerance and Role of Transgenic Plants in Environmental Clean-up. *Botanical Review*, 78(1): 32-62.

Seth CS, Misra V and Chauhan LKS (2012) Accumulation, Detoxification, and Genotoxicity of Heavy Metals in Indian Mustard (*Brassica Juncea* L.). *International Journal of Phytoremediation,* 14(1): 1-13.

Seth CS, Remans T, Keunen E, Jozefczak M, Gielen H, Opdenakker K, Weyens N, Vangronsveld J and Cuypers A (2012) Phytoextraction of toxic metals: a central role for glutathione. *Plant Cell and Environment*, 35 (2) Special Issue: 334-346.

Sharma Naina, Mohanakrishnan Dinesh, Shard Amit, Sharma Abhishek, Saima, Sinha Arun Kumar and Sahal Dinkar (2012) Stilbene-chalcone hybrids: design, sythesis and evaluation as a new class of antimalarial scaffolds that trigger cell death through stage specific apoptosis. *Journal of Medicinal Chemistry* 55(1): 297-311.

Sharma Nandini, Kumar Rajesh, Sinha Arun K, Reddy PB, Nayeem Shahid M and Deep Shashank (2012) Anthraquinone derivatives based natural dye from Rheum emodi as a probe for thermal stability of proteins:

Spectroscopic and chromatographic studies, *Journal of Pharmaceutical and Biomedical Analysis* 62(25): 96-104.

Sharma UK, Sharma N, Salwan R, Kumar R, Kasana RC and Sinha AK (2012) Efficient synthesis of hydroxystyrenes via bio-catalytic decarboxylation/eacetylation of substituted cinnamic acids by newly isolated Pantoea agglomerans strains. *Journal Science Food Agricultur* 92(*3*) 610-617.

Singh B, Bhat TK, Sharma OP, Kanwar SS, Rahi P and Gulati A (2012) Isolation of tannase-producing *Enterobacter ludwigii* from the rumen of migratory goats. *Small Ruminant Research* 102: 172-176.

Walia Y, Dhir S, Bhadoria S, Hallan V and Zaidi AA (2011) Molecular characterization of Apple scar skin viroid from Himalayan wild cherry. Forest Pathology, 42(1): 84-87.

संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा बाहरी संस्थानों में अभिभाषण

डा. बिक्रम सिंह ने 12-14 जनवरी 2012 को मानव रचना इंटरनेशनल युनिवर्सिटी में अभिभाषण दिया।

डा. विजय कुमार अग्निहोत्री ने 18 फरवरी 2012 खजुराहो म.प्र. में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में संगध तेल पर अभिभाषण दिया।

डा. संजय उनियाल ने दिनांक 25-24 फरवरी 2012 को डा. परमार बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय ,सोलन में brain storming session on "Precision farming technologies for mitigating effects of climate change" विषय पर आयोजित कार्यक्रम में प्रतिभागिता की।

डा. अरुण कुमार सिन्हा ने 10-13 मार्च 2012 को हेमवती नंदन बहुगुणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, श्रीनगर गढ़वाल में कार्यशाला में हरित रसायनिकी पर अभिभाषण दिया।

डा. संजय कुमार ने 20- 19 मार्च 2012 को जामिया हमदर्द में" Current Trends in Secondary Plant Metabolite Research" राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रतिभागिता की।

प्रशिक्षण प्राप्त किया

डा. आर.के. सूद व टीम ने 9 जनवरी 2012 को चम्बी टी इस्टेट में चाय बागानों की

प्रबन्धन पध्दति पर 28 चाय उत्पादकों को प्रशिक्षण दिया।

डा. अमित चावला ,वैज्ञानिक ने दिनांक 30 जनवरी से 1 फरवरी के दौरान मानव संसाधन विकास केन्द्र ,सी.एस.आई.आर. , गाजियाबाद में" Achieving Excellence @ Workplace" विषय पर प्रशिक्षण प्राप्त किया।
प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन

डा. अपर्णा मैत्रा पति ने दिनांक 24-22 फरवरी 2012 के दौरान मानव संसाधन विकास केन्द्र ,सी.एस.आई.आर. , गाजियाबाद में 'सीएसआईआर में मानव संसाधन विकास पर आयोजित कार्यशाला में प्रतिभागिता की।

श्री संजय कुमार, वरिष्ठ अनुवादक ने 27 फरवरी-3 मार्च, 2012 तक केन्द्रीय अनुवाद व्यूरो, गुहृ मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली में उच्चस्तरीय अनुवाद प्रशिक्षण पाठयक्रम में प्रशिक्षण प्राप्त किया।

डा. अमित चावला ,वैज्ञानिक ने दिनांक -1827 मार्च 2012 के दौरान मानव संसाधन विकास केन्द्र, सी.एस.आई.आर. , गाजियाबाद में नए भर्ती हुए वैज्ञानिकों के प्रवेश कार्यक्रम के लिए प्रशिक्षण प्राप्त किया।

प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन

डा. आर.के. सूद व टीम ने 22 फरवरी 2012 को संस्थान के चाय बागान में चाय बागानों की प्रबन्धन पध्दति पर 5 चाय उत्पादकों को प्रशिक्षण दिया।

समझौता ज्ञापन

संस्थान में 16 फरवरी 2012 को मै. गोल्डल फाल्कन फाउंडेशन एण्ड रिसर्च सेंटर, हरियाणा के साथ दिल्ली के आस-पास व गुड़गांव में 20000 बांस के पौधों की आपूर्ति हेतु।

संगोष्ठी

डा. अषु गुलाटी ने दिनांक 12-13 जनवरी 2012 को सी-डैक कोलकाता में आयोजित प्रथम भारत जापान संगोष्ठी परसेप्सन एण्ड मशील इंटेलीजेंस PerMinXII में प्रस्तुति दी।

डा. अनिल सूद, डा. आर. डी. सिंह, डा. वीरेन्द्र सिंह, डा. राकेश सूद एवं डा. मारकण्डेय सिंह ने दिनांक 28-31 जनवरी 2012 के दौरान बंगलौर में आयोजित "सीएसआईआर 800 कार्यशाला में प्रतिभागिता की।

डा. अलका कुमारी ने 25-26 फरवरी 2012 को राजकीय स्नातकोत्तार महाविद्यालय, धर्मशाला में आयोजित पादप जैवविविधता : अनुदर्शन एवं संभावनाएं विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में पालमपुर क्षेत्र के चाय बागानों की फर्न विविधता पर प्रस्तुति दी।

डा. आर. डी सिंह ने दिनांक 8 फरवरी 2012 इंडिया जियोस्पेयियल फोरम, गुड़गांव द्वारा आयोजित कार्यशाला में हिमाचल प्रदेश में आरक्षित क्षेत्रों में वन संपदा की स्थिति के अध्ययन के लिए सुदूर संवेदी प्रणाली का प्रयोग पर प्रस्तुति दी।

डा. आर. डी सिंह ने दिनांक 8 फरवरी 2012 इंडिया जियोस्पेयियल फोरम, गुड़गांव द्वारा आयोजित कार्यशाला में हिमाचल प्रदेश में आरक्षित क्षेत्रों में वन संपदा की स्थिति के अध्ययन के लिए सुदूर संवेदी प्रणाली का प्रयोग पर प्रस्तुति दी।

डा. राकेश सूद एवं डा. एस. जी. इश्वरा रैडी ने दिनांक 21 फरवरी 2012 को टीआरए कोलकाता में चाय में पादप रक्षण विषय पर आयोजित दूसरी राष्ट्रीय कार्यशाला में प्रस्तुति दी।

डा. अमित चावला ने 25-26 फरवरी 2012 को राजकीय स्नातकोत्तार महाविद्यालय, धर्मशाला में आयोजित पादप जैवविविधता : अनुदर्शन एवं संभावनाएं विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में " सुदूर संवेदी और भौगोलिक सूचना पणाली की सहायता से लाहौल घाटी की वानस्पतिक संपदा का मानचित्रिकरण" पर प्रस्तुति दी।

डा. परमवीर सिंह आहूजा, निदेशक को हिमाचल प्रदेश सरकार के आयूर्वेदिक विभाग के अन्तर्गत वनस्पति वन सोसायटी की शाषी निकाय के सदस्य तथा अनिल सूद को कार्यकारी परिषद का सदस्य चुना गया।

डा. अलका कुमारी ने 2-4 मार्च 2012 को बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में पर्यावरणीय चिन्ता और सतत विकास : भारत के लिए मुद्दे और चुनौतियां विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुति दी।

पुरस्कार/सम्मान

डा. परमवीर सिंह आहूजा, निदेशक को हिमाचल प्रदेश सरकार के आयुर्वेदिक विभाग के अन्तर्गत वनस्पति वन सोसायटी की शाषी निकाय के सदस्य तथा अनिल सूद को कार्यकारी परिषद का सदस्य चुना गया।

दूरदर्शन केन्द्र शिमला में वार्ता

विषय: बांस : ग्रामीण विकास का आधार
वक्ता: डा. अनिल सूद
दिनांक : 19 जनवरी 2012

विषय: गुणवत्ता युक्त चाय उत्पादन के लिए बागानों में सर्द ऋतु में किए जाने वाले कार्य
वक्ता: डा. आर. के. सूद
दिनांक 20 जनवरी 2012

विषय: मूल्यवर्धित उत्पाद सेब अवशेष का उपयोग
वक्ता: डा. परमवीर सिंह आहूजा
दिनांक: 13 फरवरी 2012

विषय: हिमाचल प्रदेश के दूर्गम एवं कठिन स्थलों में बीज पेलेटिंग तकनीक द्वारा पुन: स्थापन
वक्ता: डा आर. के. ओगरा
दिनांक: 09 मार्च 2012

विषय: बेहतर उत्पादकता के लिए विषाणुमुक्त रोपण सामग्री तैयार करना
वक्ता: डा. विपन हल्लन एवं डा. राजा राम
दिनांक : 23 मार्च 2012

संस्थान के निदेशक डा. परमवीर सिंह आहूजा चाय बागानों में पत्तियों की तुड़ाई का शुभारंभ करते हुए

सी एस आई ओ, चंडीगढ़ से स्थानांतरण पर संस्थान में कार्यभार ग्रहण

श्री जसवंत राय
प्रशासनिक अधिकारी 16.01.2012 से

श्री राकेश चन्द
परिचर 16.03.2012 से

संस्थान में नवनियुक्ती

श्री त्रिलोक नाथ
सुरक्षा सहायक 17.01.2012 से

श्री किरण सैनी
तकनीकी आधिकारी 13.02.2012 से

संस्थान से स्थानांतरण

श्री राजेश कुमार
अनुभाग अधिकारी 30.03.2012 से
आर ए बी, सी एस आई आर ,
नई दिल्ली

संस्थान की जैवसंपदा

रूद्राक्ष

इलियोकार्पस स्फेरिकस

इस पृथ्वी पर अनेक ऐसी-ऐसी दुर्लभ वस्तुएं हैं , जो न सिर्फ प्राणीमात्र को शारीरिक सुख ही प्रदान करती हैं ,बल्कि उनमें भौतिक एवं आध्यात्मिक गुण भी विद्यमान होते हैं। एक ऐसा ही एक पौधा है रुद्राक्ष, जिसका वैज्ञानिक नाम *इलियोकार्पस स्फेरिकस* है। संस्थान परिसर में एक पौधे में पिछले दो वर्षों से रुद्राक्ष में पुष्पण हो रहा है तथा कुछ फल भी लगे। प्राकृतिक वनस्पतियों में रूद्राक्ष अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत के अधिकांश भागों में रूद्राक्ष पाया जाता है तथापि नेपाल ,मलाया ,इण्डोनेशिया ,बर्मा आदि में यह प्रचुर मात्रा उपलब्ध होता है। भगवान शंकर के नेत्रों से रूद्राक्ष की उत्पत्ति मानी जाती है। वृक्ष में रूद्राक्ष फल के रूप में उत्पन्न होता है। आकार भेद से रूद्राक्ष अनेक प्रकार के होते हैं। रूद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रूद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। एकमुखी दुर्लभ हैं और दो मुखी से 21 मुखी तक रूद्राक्ष होते हैं। रुद्राक्ष का धार्मिक महत्त्व तो है ही परन्तु रुद्राक्ष पर हुए अनेक शोधकार्यों के परिणाम स्वरूप इसकी उपयोगिता भौतिक वादी देश अमेरिका ,यूरोप ,इण्डोनेशिया ,जावा ,सुमात्रा , फिलीपिन्स आदि में भी इसकी माँग बढ़ गई है। अनेक बीमारियों को दूर करने के गुणों के कारण भी सभी स्तर के लोग इसे धारण करने लगे हैं। रुद्राक्ष के पत्तो हरे तथा फूल भूरे रंग के होते हैं। यह एक पहाड़ी पेड़ है तथा इसके सूखे फलों की माला बनती है। रुद्राक्ष शरीर को बलिष्ठ बनाता है। खून की त्रुटियों को दूर तथा धातु को पुष्ट करता है।

प्रकाशकः
डा. परमवीर सिंह आहूजा
निदेशक
आई.एच.बी.टी., पालमपुर
दूरभाष: 01894–230411 फैक्स: 01894–230433
E-mail : director@ihbt.res.in
Website : http://www.ihbt.res.in

संकलन एवं संपादन :
डा. आर. डी. सिंह, वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक
श्री मुख्त्यार सिंह, पुस्तकालय अधिकारी एवं
श्री संजय कुमार, वरिष्ठ अनुवादक
श्री जसबीर सिंह, तकनीकी सहायक
फोटोग्राफ : श्री पवित्र गाईन